सर्व संबंध भगवान से

• ब्रह्माकुमारी मंजू, गायघाट (बनारस)

कई बार किसी व्यक्ति के संबंध-संपर्क में, संग में रहने से सुख का अनुभव होता है। उससे व्यवहार करना मन को भाता है। लेकिन व्यक्तियों के सहारे का सुख अल्पकालीन होता है जो बाद में दु:खदायी बन जाता है, यहाँ तक कि रोना भी पड़ सकता है। अविनाशी सुख प्राप्त करने के लिये अविनाशी सहारा परमात्मा ही है, इसलिए उनसे ही हमें सर्व संबंधों का सुख अनुभव करना चाहिये। वर्तमान समय परमात्मा पिता कह रहे हैं कि बंधन मुक्त बनना है तो सर्व संबंध एक मुझसे जोड़ो अर्थात् संपूर्ण प्यार जो संबंधों में बंटा है उसे एक बाबा अर्थात् परमात्मा शिव से जोड़ो। तो आइये, विभिन्न संबंधों में ईश्वरीय प्रेम का अनुभव करें।

पिता के रूप में – प्रिय बाबा, आपको देखकर अनुभव होता है कि क्यों न आपको मेरा कहूँ। बाबा, आप असली पिता, आत्मा को लगते हो। आपसे मिलने वाला प्यार अनोखा-सा लगता है। मैं कभी सोच भी नहीं सकती थी कि भगवान कभी मेरा पिता बन, मुझे मीठे बच्चे कह, रोज़-रोज़ प्यार करेगा। आपकी पालना पाकर मैं धन्य-धन्य हो गई हूँ। वाह मेरा बाबा वाह, मेरा दिल हर पल कहता रहता है कि भूलूं कैसे तुझे, जो इतना प्यार दिया।

परमात्मा परम शिक्षक के रूप में – भगवान जिसका शिक्षक बन रोज़-रोज़ पढ़ाये उसके भाग्य का क्या कहना। सिर्फ अपने को आत्मा समझ अशरीरी हो बैठ मुरली सुनो तो इतनी खुशी होती है कि इससे बढ़कर दुनिया में और कुछ नहीं। यह समय सबसे सुहावना है यदि इन अनुभूतियों में खो जायें कि जिसका शिक्षक स्वयं भगवान हो तो उसका विद्यार्थी कितना होशियार होगा। वाह! मैं आत्मा कितनी खुशनसीब हूँ। बाबा, आपने सारे राज़ सुनाकर संपूर्ण सत्य ज्ञान की अथॉरिटी बना दिया। आपके ज्ञान ने हमें अमरत्व प्रदान किया। हमें गौरव है अपने शिक्षक शिव बाबा पर। हमें स्वप्न में भी ख्याल नहीं था कि इस तरह बैठ आप पढ़ायेंगे। माया से मुक्त बना ज्ञान के शस्त्र देकर आपने हमें बलवान बना दिया।

परमात्मा के साथ सतगुरु का संबंध – मुझे प्यार करने वाले मेरे प्रिय परमात्मा शिव बाबा, मुझे मेहनत से छुड़ाने, आप स्वयं सतगुरु बनकर इस धरा पर आये। आपने हमें अनेक देहधारी गुरुओं से छुड़ाया। नज़र से निहाल किया। आपने अपनी वाणी द्वारा वरदान देते समय नयनों से असीम शक्तियाँ प्रदान कीं जिससे वे वरदान सहज ही जीवन का अंग बन गए। वाह सतगुरु शिव बाबा! आपका वरदानी हाथ सिर पर है। आपने हमारी झोली वरदानों से भर दी। हमारा भण्डारा इतना भरपूर कर दिया कि हमें कहीं भी मुड़कर देखने की ज़रूरत नहीं।

परमात्मा शिव माँ के रूप में – स्नेहमयी माँ, तुम तो ममता की मूर्ति हो। माँ, तुम्हारा प्रेम सत्य, निश्छल और शाश्वत है। तुम मेरी कमी-कमज़ोरी को समा लेती हो। माँ, तुमने मुझे अपनी आँख का तारा समझा, तभी तो कहती हो नूरे रत्न, लाड़ले बच्चे। दिल का टुकड़ा समझा, तुमने मुझे अपने गले लगा लिया। हर पल माया के वारों से बचाने के लिए अपने आँचल में छिपाती रहती हो। मेरी माँ, तुम्हारी अनुभूति वह है जो शब्दों में बाँधी नहीं जा सकती। शिव बाबा, मेरी माँ तुम ही हो, मेरा संसार तुम ही हो।

परमात्मा से खुदा दोस्त का संबंध – खुदा दोस्त, मेरी जिंदगी में रस भरने वाले, कभी कल्पना भी नहीं की कि तुम मेरे परम मित्र बनोगे। तुम मुझसे दोस्ती निभाओगे। मुझे आश्चर्य हो रहा है कि कैसे तुमने मुझे पसंद करके दोस्ती कर ली। कहाँ तुम, कहाँ मैं। लगता है कि तुम मेरे पावन दिल पर फ़िदा हो गये या तुम्हारे दिल में मुझे कुछ बनाने की कामना है, मुझे इस जगत में श्रेष्ठ महान् बनाना चाहते

हो। बाबा, मुझे तुम्हारी दोस्ती पर गर्व है। मैं इस दोस्ती का पूरा-पूरा लाभ ले रही हूँ। तुम मेरे हर संकल्प पूरे करते हो। अब मैं आपके संकल्प पूरे करूँगी। मेरे मित्र, तुम मेरे अति समीप हो, मैं दिल की हर बात तुमसे ही करना पसंद करती हूँ। दिल का हर हाल तुम्हारे बिना किसे सुनाऊँ, बोलो, मैं तुमसे क्यों ना खेलूँ, क्यों न तुम्हारे साथ नाचूँ, क्यों न तुम्हारे ही संग खाऊँ। मुझे तुम्हारी दोस्ती की ही मस्ती सदा रहती है।

परमात्मा को बच्चे के रूप में – वाह! जिसने स्वयं भगवान को अपना बच्चा बनाया हो, उसे किस बात की कमी? जो समस्त विश्व का रक्षक है, वह जिसका बच्चा हो तो उसे अपनी रक्षा की क्या चिंता! मैंने उसे अपना वारिस बनाया, स्वयं भाग्य विधाता ही मेरा बच्चा बन गया। अहो मेरा कितना सौभाग्य है जो सर्वगुणों का सागर है, स्वयं सर्वशक्तिवान है, ऐसे बच्चे पर मुझे कितना नाज है। इस दुनिया के बच्चे तो अपने माँ-बाप को केवल श्मशान घाट तक ही पहुँचाते हैं लेकिन यह वफादार बच्चा तो मुझे अंत तक साथ देगा और साथ घर परमधाम भी ले जाएगा। मुझे विश्वास है, ऐसा महान् बच्चा मुझे हर मुसीबत से बचा लेगा। वाह मेरा भाग्य! वाह मेरा लाड़ला बच्चा! तुम्हारे बिना एक पल भी जीने का सोच भी नहीं सकती। तुम अपनी माँ को कितना प्यार करते हो। वाह मेरे सुपुत्र! जब तुम मेरी गोद में होते हो तो जैसे दुनिया ही भूल जाती है, तुम्हें ही निहारती रहती हूँ। तुम पर तो सिर्फ मेरा ही अधिकार है और बाबा तुम्हारा भी मेरे ऊपर पूरा अधिकार है तभी तो तुम पर बलिहार गई।

परमात्मा से साजन का संबंध – मेरे सलोने साजन, तुम्हारी महिमा जितनी लिखूँ, कम है। लोग तुम्हें सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के रूप में जानते हैं। तुमने मुझे अपनी सजनी बनाया। अपनी नज़रों में ऊँचा उठाकर प्रेम-दीवानी बना दिया। जब ज्ञान मुरली सुनाते हो तो लगता है कि आप मुझे दिव्य गुणों से शृंगारते हो। आपने मेरी कमी कभी नहीं देखी, सदा मीठी समझानी देते रहते हो। आप ज्ञान सागर की लहरों के साज से तन-मन नाचता ही रहता है। मन कहता है, मुरली की धुन खत्म न हो जाये। जाने क्यों समय इतनी जल्दी उड़ जाता है, मुरली को समाप्त होना ही पड़ता है लेकिन दिल तो चाहता है, तुम्हें सुनती ही रहूँ, तुम नयनों में बसे ही रहो, मैं तुम्हारे सुंदर स्वरूप को निहारती रहूँ। तुम्हारे दिव्य स्वरूप व दिव्य तेज में समाती रहूँ, बस, यही तमन्ना मेरे दिल की है दिलाराम।

इस प्रकार 'मैं आत्मा हूँ' यह अभ्यास बढ़ता जाए और आत्मा परमात्मा में लवलीन रहने लगे तो दिल आनन्द की लहरों में लहराने लगता है जिससे परमानन्द का अनुभव होता है।

❖

दृष्टि बनती है .. पृष्ठ 1 का शेष

उद्दीपन है उसकी प्रतिक्रिया या प्रत्युत्तर है – वह कैसे बदले? वह प्रतिक्रिया किस पर निर्भर है? अन्तर्दृष्टि (inlook) पर। जब तक मनुष्य की अन्तर्दृष्टि नहीं बदलेगी तब तक बाहर की दृष्टि नहीं बदलेगी। वो दृष्टिकोण कैसे बदलेगा? बाबा की ज्ञान-मुरलियों से। बाबा मुरलियों में सुनाते हैं कि सब मरे पड़े हैं, ये मूर्छित हुए पड़े हैं, ये सब आसुरी संप्रदाय वाले हैं इत्यादि-इत्यादि। ये सारी बातें हम सुनते हैं, फिर हमारा प्रत्युत्तर (response) उसके अनुसार होता है। जैसे कंप्यूटर में प्रोग्राम डाला जाता है और कंप्यूटर उसी प्रोग्राम अनुसार चीज़ हमारे सामने लाता है। जब बाबा का दिया हुआ ज्ञान बुद्धि में भरता जाता है, धारण होता जाता है तब हमारा दृष्टिकोण बदलता है। जब दृष्टिकोण बदल जाता है तब दृष्टि भी बदलती है क्योंकि दृष्टिकोण से पहला परिवर्तन होता है वृत्ति में। फिर वृत्ति से बदलती है स्मृति और स्थिति। उससे फिर हमारी दृष्टि स्वयं बदल जाती है। अगर हम चाहते हैं कि हम अखण्ड पवित्रता का पालन करें, पवित्रता रूपी जो श्रेष्ठ खज़ाना है, बाबा का दिया हुआ जो वरदान है, उसको किसी भी रीति से न गँवायें, वह सदा हमारा बना रहे, उसके लिए हमारी दृष्टि ठीक रहे। ❖